अयोध्या का धार्मिक इतिहास

–आनन्द कुमार दूबे एवं प्रो. एन.के. तिवारी*
शोध छात्र
*प्रोफेसर : इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग
डॉ. राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय अयोध्या

सारांश–

अयोध्या पुरी का वर्णन विभिन्न धार्मिक ग्रन्थों में धर्म नगरी के रूप में किया गया है। परम्पूज्य गोस्वामी तुलसीदास जी से लेकर महाकवि कालीदास जी द्वारा अयोध्या के महात्म्य का विवेचन किया गया है। हिन्दू धर्म ग्रन्थों के साथ–साथ जैन, बौद्व आदि धर्म ग्रन्थों में अयोध्या की प्राचीनता एवं महत्ता का उल्लेख प्राप्त होता है। वेदो में इस नगरी को दिव्य तथा अलौकिक रूप में दर्शाया गया है प्रभू श्रीराम की जन्म स्थली के साथ–साथ अयोध्या का सम्बन्ध जन मानस के भाव से गहराई से जुड़ा हुआ है।

मुख्य शब्द–

राज्य केन्द्र, प्रणयनधरा, साकेत, विनीता, शिव संहिता, स्मृतियां, ब्रह्म संहिता, सप्तावरण, वशिष्ट संहिता, परचम द्वार, वैष्णव खण्ड, सुशोभित दुर्ग, सिगरोपाख्यान, भुशुण्डि रामायण, मुक्तदायिनी, कोशल, महापथ।

अयोध्या सम्पूर्ण विश्व में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम जी के जन्मभूमि एवं धर्म नगरी के रूप में विख्यात है। अयोध्या नगरी विश्व के प्रथम राज्य–केन्द्र, मनुस्मृति की प्रणयन–धरा, वैष्णव, जैन एवं बौद्व धर्मावलम्बियों के पवित्र तीर्थ स्थली के रूप में प्रसिद्व है। भारतीय साहित्य, धर्म, दर्शन, कला आदि विविध रूपों एवं मान्यताओं में अयोध्या का ईश्वर की नगरी के रूप मे वर्णन किया गया है।

[1]शिव सहिता में अयोध्या को नन्दिनी, सत्या साकेत, कोसला राजधानी ब्रह्मपुरी और अपराजिता के नामों से सम्बोधित किया गया है। इन नामों में साकेत विशेष लोकप्रिय है। बौद्व साहित्य में अयोध्या के लिए, साकेत नाम का उल्लेख विविध स्थानों पर किया गया है। प्रसिद्व बौद्व ग्रन्थ दिव्यावदान में साकेत की व्याख्या इस प्रकार की गयी है।

[2]**''स्वयभागता स्वयभागता स्वयभागतेति साकेत–साकेत संज्ञा सविता।''**

अर्थात् स्वयं उत्पन्न या आविर्भूत होने के कारण अयोध्या को साकेत कहते हैं। जैन धर्म में आदिपुराण के अनुसार –

[3]**''साकेत – रुढिरयप्स्या श्लाहयैव सुनिकेतनैः।**
स्वनिकेत इवाह्वातुंसाकूतेः केतवाहुभिः।।''

अर्थात् इसको साकेत इसलिए कहते थे कि इसमें अच्छे–अच्छे मकान है, उन पर सदैव झण्डे लहराते थे जिससे यह ज्ञात होता है कि वे देवताओं को नीचे की ओर आमंत्रित कर रहे हो। पालि साहित्य एवं मध्यकालीन संस्कृत साहित्य में भी साकेत को अयोध्या के पर्यायवाची के रूप में दर्शाया गया है।

महाकवि कालिदास जी ने रघुवंश के दशम सर्ग में अयोध्या और षोडश सर्ग में साकेत लिखकर दोनों ही नामों को एक माना है। कोसल को भी अयोध्या के प्रचलित नामों में से एक माना गया है। स्वयं परम पूज्य श्री गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस में कहा है–

[4]**प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।**
हृदय राखि कोसलपुर राजा।।

महाकाव्य रामायण के प्रणेतामहर्षि बाल्मीकि के अनुसार ''कोसल'' उस विशाल जनपद का नाम था जिसके अन्तर्गत अयोध्या स्थित था। गुप्त काल में अयोध्या को विशाखा नाम से भी जाना जाता रहा है। जैन संस्कृत ग्रन्थों में अयोध्या को विनीता के नाम से भी पुकारा गया है। पूज्यपाद गोस्वामी तुलसीदास जी मे रामचरितमानस में अयोध्या को अवधपुरी नाम से स्मरणीय एवं पूजनीय बताया है। तुलसी के परवर्ती राम – साहित्य में भी अवध अडध एवं औध नाम अयोध्या के अर्थ में प्राप्त होते हैं। हिन्दी विश्वकोष के अनुसार अवध शब्द का निर्माण अयोध्या में हुआ माना जाता है। अयोध्या का शाब्दिक अर्थ है जिससे कभी युद्ध नकिया जा सके।

[5]रुद्रयामल तंत्र में कहा गया है–''न यौद्धशक्यते यस्मात् तामयाह्यां ततो बिदुः।

संस्कृत साहित्य में प्रयुक्त अयोध्या शब्द पालि प्राकृत तथा अपभ्रंश की रचनाओ में अपने मूलरूप से अलग उज्झह < अबज्झह < अवज्झा के रूप में प्रयुक्त होती है माना जाता है कि ग्यारहवीं शती के उतरार्द्ध तक अयोध्या शब्द लोक जीवन में अउज्झा या अवज्झा के नाम रूप से ज्यादा प्रचलित हो गया। डॉ0 जगदीश सहाय का मत है कि सम्राट अकबर के समय तक सामान्य जनता में अवध शब्द अयोध्या के पर्याय के रूप में प्रचलित माना जाता था। इसी कारण प्रान्तों का विभाजन करते समय अयोध्या के आस–पास वाले क्षेत्रों को अवध नाम दे दिया गया।

अकबर के समकालीन गोस्वामी तुलसीदास जी के द्वारा रचित श्रीराम चरित मानस में अयोध्या के अर्थ में अवध शब्द का प्रयोग उक्त तथ्य की ओर भी स्पष्टता प्रदर्शित करता रहा है इस प्रकार से भारतीय साहित्य में अयोध्या, साकेत और अवध एक ही अर्थ में प्रयुक्त किए जाते रहे हैं। सर्वप्रथम अयोध्या का उल्लेख अथर्ववेद के दशम मण्डल में प्राप्त होता है।

इक्तीसवें मंत्र में अयोध्या का नामोल्लेख किया गया है। उसके अनुसार अयोध्यापुरी अष्टचक्र एवं नवद्वारों से. युक्त देवताओं द्वारा सेवित तथा स्वर्ग की तरह समृद्धि सम्पन्न है –

[6]अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूः अयोध्या; तस्यां हिरण्मयः कोशः स्वर्गोज्योतिषावृतः।

वेदों में अयोध्या का स्वरूपदिव्य एवं अलौकिक रूप से वर्णित किया गया है। उपनिषदों, ब्राह्मणों, संहिताओं, स्मृतियों, पुराणों एवं धर्मशास्त्रों में दिव्य अयोध्या और पार्थिव अयोध्या की तात्विक अभेदता का विस्तृत वर्णन किया गया है। सहिंता ग्रन्थों में भी इसका विस्तारपूर्वक उल्लेख किया गया है। शिव सहिंता के अनुसार परलोक में स्थित अयोध्या श्रीराम के दिव्य भोगों की भूमि है। पृथ्वी पर स्थित अयोध्या उनकी लीला भूमि है –

भोगस्थानं परायोध्या लीलास्थानंत्वियंभुविः
भोगलीला पती रामों निरकुंश विभूतकः।।

[7]बृहद ब्रह्मसहिंता में गया है कि अयोध्या नगरी के द्वार पर सरयू नदी क्रीड़ा रूपी स्थिति में विद्यमान हैं

''साकेत के पूरे द्वारे सरपू केलिकारिणी।''

वशिष्ठ संहिता में अयोध्या वर्णन वक्ता एवं श्रोता शैली में प्राप्त होता है भारद्वाज ऋषि के द्वारा सर्वोत्तम भगवतधाम के सम्बन्ध में प्रश्न किये जाने पर वशिष्ठ ऋषि ने उन्हें दिव्यतम अयोध्या के विषय में दर्शाया है–

अयोध्या नगरी नित्या सच्चिदानन्दरूपिणी; यस्यांशेन बैकुण्ठों गोलोकादिप्रतिष्ठितः।।
यत्र श्री सरयूनित्या प्रेमावारि प्रवाहिणी;यस्या अंशेन सम्भूता विरजादिसरिदुराः।।

वशिष्ठ सहिंता के 26वें अध्याय में वर्णित दिव्यतम अयोध्या नगरी सप्तावरण वाली बतलायी है। अयोध्या को परम पवित्र नगरी के रूप में दर्शाया गया है। वेदों में सूत्रात्मक ढंग से वर्णित परायोध्या ''वशिष्ठसहिंता'' में विस्तारपूर्वक वर्णित की गयी है। ''सनत्कुमार सहिंता'' के श्रीरामस्तवराज अयोध्या नगरी की रम्यता और रत्नों के सिंहासन पर आसीन भगवान राम का उल्लेख मिलता है।[8]

बृहद ब्रह्मसहिंता तथा शिवसहिंता में अयोध्या को चार द्वारों वाला बताया गया है। द्वारपालों के रूप में अंगद, हनुमान, सुग्रीव तथा विभीषण क्रमशः उत्तर, दक्षिण, पूर्व और परचम द्वार के रक्षक नियुक्त थे।[9] श्रीराम रहस्योपनिषद् के उत्तरखण्ड में अयोध्या को समस्त बैकुण्ठों का मूल आधार और श्री सीताराम जी की नित्य विहारभूमि माना गया है। वैदिक साहित्य तथा संहिता ग्रन्थों में भी इसके सन्दर्भ में प्रमाण मिलते है।

प्राचीन साहित्य में अयोध्या को विशेष प्रमुखता प्रदान की गयी है। पुराणों में अयोध्या का पार्थिव वर्णन प्रधान है। ब्रह्मपुराण, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, श्रीमद् भागवत, वायुपुराण, मत्स्यपुराण तथा ब्रह्माण्ड पुराण में अयोध्या धाम की चर्चा की गयी है।स्कन्द पुराण एवं पद्मपुराण में अयोध्या का विशद वर्णन किया गया है। [10]स्कन्दपुराण के वैष्णव खण्ड में अयोध्या की समृद्धि एवं महत्ता का वर्णन है। भगवान श्रीराम के द्वादश–वर्षीय यज्ञ में सम्मिलित होने के लिए पधारे हुए ऋषि–मुनियों के समक्ष सूत जी ने अयोध्या के महात्म्य सुन्दरता का बखान किया है–

अयोध्या पुरी परम पवित्र हैं, पापी मनुष्यों को इसकी प्राप्ति सम्भव नहीं है; जिसमें साक्षात् हरि निवास करते हैं, वह पुरी भला किसके द्वारा सेवनीय नही है।

अयोध्या पुरी अमरावती के समान दिव्य और परम शोभन तपस्वी महात्माओं से युक्त अयोध्या सरयू के तीर पर स्थित है। इसी प्रकार आगे के चौदह श्लोकों में अयोध्या की समृद्धि एवं कव्यतम स्वरूपका वस्तुनिष्ठ वर्णन प्राप्त होता है।

डॉ0 जनार्दन उपाध्याय ने ''संस्कृत साहित्य में अयोध्या'' शीर्षक लेज में स्कन्दपुराण में वर्णन किये गए अयोध्या माहात्म्य तीर्थों की स्थिति को अयोध्या के वर्तमान स्वरूप से मिलता बतलाया है।[11]

स्कन्द पुराण में अयोध्या की आकृति के विषय में वर्णन है कि विष्णु के द्वारा प्रकाट्य यह पुरी मत्स्य आकृति के समान है, जिसका शिरोभाग पश्चिम भाग दिशा में गोप्तार घाट पर स्थित है।

अधोभाग पूर्व की ओर तथा दक्षिण के हिस्से मध्यभाग के रूप में आश्रित है। अयोध्या के नामाक्षरों की महिमा का विवरण पुराण में मिलता है जिसमें अकार को ब्रह्मवाची, यकार को विष्णुवाची तथा धकार को रुद्रवाची माना गया है।

[12]पद्मपुराण के पातालखण्ड में अयोध्या का 4–5 (चार– पाँच) स्थलों पर उल्लेख मिलता है। तीसरे अध्याय में राम के वन से वापसी के प्रसंग में अयोध्या को सुसज्जित किएजाने का वर्णन बीस श्लोकों में किया है। पाँचवें के राज्याभिषेक के पश्चात् स्थापित राम राज्य का वर्णन मिलता है। सैंतीसवें अध्याय में आरण्यक मुनिके अयोध्या आगमन प्रसंग में भी अयोध्या वर्णन से सम्बन्धित तीन–चार श्लोक है। पैसठवें अध्याय में भी ध्वजों से सुशोभित दुर्ग के द्वारा अयोध्या की भव्यता को दर्शाया गया है।

[13]श्रीमद्भागवत के नवम् स्कंध कुल 24 अध्यायों में सूर्यवंश और चन्द्रवंश का विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता में है। परन्तु अयोध्या का मात्र नामोल्लेख है। नवम् स्कंध के आठवें अध्याय में सिगरोपाख्यान के अन्तर्गत सरयूऔर अयोध्या का नाम आया है। [14]विष्णु पुराण के चौथे अध्याय, मरस्यपुराणे के सूर्य वंश में ''भविष्य पुराण'' के त्रेतायुगीन भूप– वृतान्त प्रसंग में तथा ब्रह्माण्ड पुराण'' में अयोध्या का उल्लेखित किया गया मिलता है।

''महाभारत'' से प्राप्त रामाख्यान में भी अयोध्या के नाम का उल्लेख है। वन पर्व में इसे एक पवित्र तीर्थ स्थल के रूप में स्मरण किया गया है।

संस्कृत में रचित अन्य धार्मिक साहित्य में भी अयोध्या पुरी की चर्चा है। [15]पुराणेत्तर धर्मग्रन्थ ''विष्णुधर्मोन्तार'' में कोशल एवं अयोध्या का वर्णन मिलता है। इसमें कहा गया है **कि ''अयोध्या नगरी विशाल परिखा से घिरी हुई सरयू नदी के तीर पर शोभित है।''** यहाँ शोभा सम्पन्न भवनों सुविभक्त महापथों, श्रेष्ठजनों, अश्वों, श्रेष्ठतम कलाकारों, विद्वानों आदि से यह नगरी समृद्धि है। यहाँ संगीत की मधुरता सदैव निवास करती है।

[16]भुशुण्डि ''रामायण''के प्रथम एवं षष्ठ अध्याय में गरूड़ जी ने कोशल अयोध्या को मुक्तिदायिनी धाम एवं पुरी कहा है। कहीं–कहीं साकेत का भी उल्लेख मिलता है। इसके की 101 अध्याय में दशरथ की तीर्थ यात्रा के प्रसंग में अवध क्षेत्र के तीर्थों– स्वर्गद्वार, सप्तहार, ब्रह्मकुण्ड, द्वादश वन, नागेश्वरनाथ, लक्ष्मणकुण्ड तथा नन्दिग्राम आदि का वर्णन किया गया है। मुनि वशिष्ठ अयोध्या की महत्ता पर गया है। कहते है–

''अदौ तवैव भविकावलिदायिनीम,
दिव्या पुंरी परममंगलभूरियोध्या।
आस्ते परा सकल कल्मष नाशितोया,
पुण्यां विभाति सरयूः सरितां वरिष्ठा।।''

निष्कर्ष–

राम और उनके वंशजों की कथा पर आधारित संस्कृत के अनेक महाकाव्यों, नाटकों, तथा कथा ग्रन्थों में अयोध्या के विषय में प्रचुर वर्णन प्राप्त होता है। वाल्मीकी रामायण, रघुवंश, जानकी हरण तथा भट्टि महाकाब्य में अयोध्या पुरी के स्वरूप का विस्तृत परिचय मिलता है। इसी प्रकार वशिष्ट संहिता में अयोध्या का वर्णन वक्ता एवं श्रोता शैली में प्राप्त होता है। स्कन्द पुराण में अयोध्या की आकृति के विषय में वर्णन है। विष्णु के द्वारा प्रकाट्य यह पुरी मत्स्य आकृति के समान बताया गया है। इस प्रकार अयोध्या का वर्णन विभिन्न स्वरूपों में प्राप्त होता है।

सन्दर्भग्रन्थ – सूची

1. शिव सहिंता
2. दिव्यावदान – बौद्वग्रन्थ
3. आदिपुराण
4. रामचरितमानस– गोस्वामी तुल्सीदास, चौपाई, सुन्दरकाण्ड
5. रूद्रयायल तंत्र
6. अथर्ववेद– दशम मण्डल
7. बृहद ब्रह्मसहिंता
8. वशिष्ठ सहिंता– अध्याय–26
9. श्रीराम रहस्योपनिषद्– उत्तरकाण्ड
10. स्कन्दपुराण– वैष्णव खण्ड
11. उपाध्याय जर्नादन डॉ0– संस्कृत साहित्य में अयोध्या
12. पद्म पुराण, पाताल खण्ड
13. श्रीमद्भागवत , नवम् स्कंध, अध्याय–24
14. विष्णु पुराण– चतुर्थ अध्याय
15. विष्णुधर्मेन्तर ग्रन्थ
16. भुशुण्डि रामायण–1, 6 अध्याय